विद्याभवन बालिका विद्यापीठ लखीसराय

कक्षा -षष्ठ दिनांक -16-09-2020

विषय -हिन्दी विषय शिक्षक - पंकज कुमार

एन, सी, ई, आरटी, पर आधारित

सुप्रभात बच्चों आज पाठ -6 हम पंछी उन्मुक्त गगन के कविता के बारे में अध्ययन करेंगे।

हम पंछी उन्मुक्त गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : हम खुले (उन्मुक्त) आसमान (गगन) में उड़ने वाले पक्षी (पंछी) है , हम पिंजरे के अंदर बंद होकर (पिंजरबद्ध) नहीं गा पाएंगे। सोने की सलाखों (कनक तीलियों) से टकराकर हमारे नरम (पुलकित) पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है कटुक निबोरी
कनक-कटोरी की मैदा से,

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : हम (पंछी) बहता हुआ जल पीने वाले प्राणी हैं। हम भूखे प्यासे मर जायेंगे। कड़वी निंबोरी (नीम के पेड़ का फल) सोने की कटोरी (कनक कटोरी) में मिलने वाले भोजन (मैदा) से अच्छी (भली) है।

स्वर्ण-श्रृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरू की फुनगी पर के झूले।

हिंदी में अर्थ / व्याख्या : सोने की जंजीरों (स्वर्ण-श्रृंखला) में बंधे होने को वजह से हम अपनी रफ़्तार (गति) और उड़ने की कला (उड़ान) भूल चुके हैं। पेड़ (तरु) की टहनियों (फुनगी) और पंखों (पर) के झूलों को हम सिर्फ सपनों में ही देख पा रहे हैं।

गृहकार्य

(क) पिंजरे में बंद पक्षी के जीवन में क्या परिवर्तन होने वाला है?
(ख) उड़ान के बदले में पक्षी क्या -क्या त्यागने के लिए तैयार है?